Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्रेमचंद की कहानियों में नारी अध्ययन

किरण ठाकुर* डॉ. संध्या बिसेन**

* शोधार्थी (हिन्दी) स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंस, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, बालाघाट (म.प्र.) भारत
** विभागाध्यक्ष (हिन्दी) स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंस, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, बालाघाट (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय जन की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों को उजागर करती हैं। प्रेमचंद अपनी कहानियों में समाज के हर वर्ग के साथ नारी समस्याओं पर केवल चर्चा नहीं करते अपितु नारी के स्वतन्त्र होने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रेमचंद नारी के अस्तित्व को सजग करनेके लिये स्वयं सजग होने की सलाह देते हैं। नारी जागरण की जोत जगाने के लिए, प्रेमचंद अपने लेखन से घर-घर नारियों को जागृत करते हैं। प्रेमचंद जी का वर्षो पहले अपने कहानियों के माध्यम से नारी के अस्तित्व और मूल्यों के लिये जो संघर्ष किया वह नव जागरण के इतिहास में बहुमूल्य योगदान हैं। इसी कारण प्रेमचंद का 'नारी विमर्श' प्रासंगिक बना हुआ हैं।

शब्द कुंजी – प्रेमचंद, नारी विमर्श।

प्रस्तावना – प्रेमचंद नारी पात्रों को मध्य में रखकर लगभग डेढ़ सौ कहानियाँ लिखी। जिसमे हर एक कहानी किसी न किसी रूप से नारी जीवन से जुड़ी समस्या व्यक्त करती हैं एवं नारी की बहुरंगी छवियों को प्रदर्शित करती हैं। प्रेमचंद की शुरुआती कहानियाँ आदर्श संबंधी थी जिसका अध्ययन कर आम जन का मन परिवर्तित हो उठता था और समस्याओं को हल करने का मार्ग प्राप्त होता था। एक अंतराल बाद उनके कहानियों में घटनाओं के स्थान पर अनुभव आधारित यर्थाथ का लेखन दिखाई देने लगता है। अंत में उनकी कहानियाँ वास्तविकता का रूप धारण करती है जो सहानुभुति, करुणा, दया और गहनता को प्रदर्शित करती है।

सर्वप्रथम नारियों की पहल आर्य समाज ने की। उन्होंने विधवा विवाह और नारी शिक्षा पर ठोस कदम उठाये। ब्रहम समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय ने सती प्रथा का अंत किया औरनारियों को सशक्त बनाया। नारी संपत्ति और अंतर्जातीय विवाह के प्रति भी ब्रह्म समाज ने खासा समर्थन किया। बाल विवाह, पर्दाप्रथा, छुआछूत यह मुख्य उद्देश्य थे जिसमें नारियाँ स्वयं अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सामने आई।

महात्मा गांधी नारी शक्ति के सजग प्रहरी हुए। उन्होनें बाल विवाह, विधवा विवाह के प्रति उनका दृष्टिकोण यह था कि नारी पुरुष की गुलाम नहीं है। वह अर्धांगिनी है, दामिनी हैं। नारी को मित्र समझना चाहिए परन्तु पुरुष वर्ग उसे अपना साथी न समझकर उसका स्वामीमानता है। गांधी जी नारियों और पुरुषों के लिये समान अधिकार चाहते थे।

1930 ई. के समय भारतीय नारी की स्थिति में अत्याधिक परिवर्तन हुआ। इसमें नारी वर्ग राजनीति में भाग लेने लगा। देश की जागृति में हिन्दी कथाकारों में लोगों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया। प्रेमचंद गांधीजी से प्रभावित होकर लेखन के माध्यम से नारी जीवन को सशक्त करने लगे।

प्रेमचंद की कहानियों में नारी संघर्ष – भारतीय समाज पुरुष प्रधान होने के कारण यहाँ पुत्रियों को वह स्थान नहीं मिलता जो पुत्रों को मिलता है और यह स्थिति आज संतोषप्रद नहीं है। जिस समाज में हम रहते है यहाँ कहाँ जाता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' इसके बाद भी नारी की स्थिति दयनीय हैं। प्रारंभिक काल में नारी को समाज में अभिशाप माना जाता था। प्रेमचंद के कथा साहित्य में इस घटना का चित्रण मिलता है। समाज का पुरुष अपनी स्त्री से इसीलिए नाराज रहता है कि वह वंश को आगे बढ़ाने के लिए बालक को जन्म नहीं देती हैं। 'नैराश्य' कहानी की निरुपमा ऐसी ही अभागनी स्त्री हैं। उसका विवाह एक सम्पन्न परिवार में हुआ। परन्तु कन्या जन्म के कारण सदैव पति से तिरस्कृत होती रहती हैं। कहानी के कुछ अंश इस प्रकार हैं- आज आदमी अपनी स्त्री से इसलिए नाराज रहते हैं कि उसके यहाँ लड़कियाँ क्यों होती हैं, लड़के क्यों नहीं होते। सीधे मुँह बात नहीं करते। कई दिनों तक घर में ही नहीं आते और आते भी तो इस तरह खींचे तने रहते कि निरुपमा थर-थर काँपती रहती थी कि कही गरज न उठे। सबसे बड़ी विपत्ति यह थी कि त्रिपाठी जी ने धमकी दी थी कि कन्या हुई तो मैं घर छोड़कर निकल जाऊँगा।इस नर्क में क्षण भर भी न ठहरूंगा। निरुपमा को यह चिंता खाई जाती थी। निरुपमा घोर निराशा की दशा में अपनी भाभी को पत्र भेजती, उसकी भाभी उसे महात्मा के दर्शन के लिए बुला लेती है और बोलती है कि महात्मा का आर्शीवाद निष्फल नहीं जा सकता। अब वह पुत्रवती होगी। जब वह गर्भवती हुई तो सबके दिलों में आशाएँ हिलोरे लेने लगी लगी। उसका सम्मान बढ़ जाता है किन्तु कुछ समय पश्चात् जब पुन: कन्या हुई तो जनते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

हमारे समाज में नारी की आरंभिक दशा यहीं थी जिन कार्यो के लिए पुरूषों का गुण-दोष नहीं देखा जाता था, उसी के लिए नारी प्रताड़ित होती रही हैं। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से समाज के इस दोहरी नीति और छोटी मानसिकता पर करारा प्रहार करते हैं। उनका यह संदेश है कि सामाजिक अन्याय और धार्मिक कर्मकांडों से जीवन की शांति नहीं प्राप्त हो सकती। सच्चे जीवन की खोजके लिए हमें समाज और धार्मिक मान्यताओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए।[1]

प्रेमचंद अनमेल विवाह के विरुद्ध थे। इन विवाह से विवाहिक जीवन में

क्या-क्या समस्याएँ आती है इसका यर्थाथ चित्रण 'नरक का मार्ग' और 'नया विवाह' कहानियों में चित्रित किया हैं।

कहानी 'नरक का मार्ग' की मुख्य पात्र एक महिला है जो एक ऐसे व्यक्ति से शादी करने के बाद अपना जीवन बर्बाद कर लेती है जो उससे मेल नहीं खाता। वह अपनी दुर्दशा के लिए अपने पति और पिता को जिम्मेदार ठहराते हुए अपना दु:ख व्यक्त करती हुई कहती है 'कभी-कभी मुझे बेचारे पर दया आती है यह नहीं समझते कि नारी जीवन में कोई ऐसी वस्तु भी है जिसे खोकर उसकी आँखों में स्वयं भी नरक तुल्य हो जाता है।[2]

कहानी 'नया विवाह' की आशा अपने से काफी बड़ी उम्र के पति को पाकर खुश नहीं हैं वह अपने धर्म को निभाना जानती है किन्तु यौवन की आकाक्षाएँ उसे घर के नौकर के प्रति आकर्षित कर देती है जब जुगल आशा के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा करता है तो उसका मन उमंग से भर उठता है। वह सोचती है लाला डंगामल ने असंख्य बार आशा के रूप और यौवन की प्रशंसा की थी, मगर उनकी प्रशंसा में उसे बनावट श्री गंध आती थी। वह शब्द उनके मुख से निकलकर कुछ ऐसे लगते थे, जैसे पंगु दोड़ने की चेष्टा कर रहा हो। जुगल के इन सीधे शब्दों में एक नशा था एक चोट थी। आशा की सारी देह प्रकम्पितहो गई।[3]

'सौत' व 'स्वामिनी' कहानियों में लेखक ने एक ऐसे चरित्र का निर्माण किया जो प्रेम, त्याग, बलिदान के साथ-साथ स्त्री सुलभ ईष्या से भी भरी प्रतीत होती है।

'सौन' कहानी में रामू, रजिया का पति जो औलाद की चाह में दुसरा विवाह करता हैं। सौतन के घर आ जाने से रजिया के मन में ईर्ष्या का भाव जागने लगता है किन्तु रजिया अपनी ईर्ष्या का भाव दबाकर घर छोड़ देती है और अपनी स्वयं की पहचान बनाती हैं। जब उसे पता चलता है कि रामू अंतिम सॉस ले रहा है तो उसका मन नही मानता और वह रामू से मिलने आ जाती है और अंत में रामू की मृत्यु हो जाने के बाद सौतन को गले लगाकर कहती है क्यों रोती है बहन ? वह चला गया। मैं तो हूँ। किसी बात की चिन्ता न कर।[4]

'स्वामिनी' कहानी की नायिका भी अपने पति की मृत्यु के बाद खुद को संभालते हुये सारे घर का दायित्व अपने कंधों पर लेकर सब कुछ परिवार के लिए समर्पित कर देती है। रामप्यारी के रूप में लेखक ने एक ऐसे चरित्र का चित्रण किया है जो सामान्य होकर भी विशिष्ट है जिसके विषय में लेखक कहते है 'एक-एक करके प्यारी के गहने उसके हाथो से निकलते जाते थे। वह चाहती थी मेरा घर गाँव में सबसे सम्पन्न समझा जाए।'

कभी घर की मरम्मत के लिए, कभी बैलों की नई गोई खरीदने के लिए, कभी नातेदारों के व्यवहार के लिए और कभी बीमारों की दवा दारु के लिए रुपयों की जरूरत पड़ती रहती थी। वह अपनी कोई न कोई चीज निकाल देती। चीजें एक बार हाथ से निकलकर फिर न लौटती थी। वह चाहती तो इनमें से कितने ही खर्चों को टाल जाती परन्तु रामप्यारी ऐसा न करते हुए अपने घर के मान सम्मान की रक्षा की।[5]

'सोहाग का शव' कहानी की नायिका सुभ्रदा भी अपने पति द्वारा धोखा दिये जाने पर मिन्नत नहीं करती। वह अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा करती है। जब उसे ज्ञात होता है कि लन्दन जाकर केशव किसी अन्य लड़की से विवाह कर रहा है तो वह इसका प्रतिरोध नहीं करती अपितु उस परिस्थिति में विजय प्राप्त करती है। वह कहती है 'क्या पुरुष हो जाने से सारी बातें क्षम्य और स्त्री हो जाने से सभी अक्षम्य हो जाती है।'[6]

प्रेमचंद समाज में विधवाओं की स्थिति पर प्रकाश डालते है। प्रेमचंद अपनी कहानी 'बेटों वाली विधवा' में विधवाओं की व्यथा व्यक्त करते है। जब तक पति रहता है तब तक उसका अपने घर पर अधिपत्य था परन्तु पति की मृत्यु के उपरान्त ही उसकी दशा अनाथों जैसी हो जाती है। कुछ धन सम्पत्ति और रूपये जो उसके पति कीअमानत थी उस पर भी उसका अधिकार रह नहीं जाता। जो कल तक घर की स्वामिनी थी आज वहीं नौकरानी से भी बदतर जीवन यापन कर रही है। सुबह उठकर घर का सारा काम करती, खाना बनाती, बेटे बहुओं को खिलाती, बर्तन चौका करती उसके बाद भी उसके साथ नौकरों के सदृश व्यवहार किया जाता। यहाँ तक कि उसका जो पहले का कमरा था वह भी खाली करा लिया जाता है और उसे एक छोटी सी कोठरी में भिखारिनी कीभाँति जीवन व्यतीत करना पड़ता है। हमारा समाज सोचता है कि विधवाओं को जानवरों की भाँति सिर्फ काम करना और भोजन दो की आवश्यकता होनी चाहिए। लेकिन जानवर तो काम चाबुक के नोंक पर करता है और भोजन मन से करता है परन्तु बेटों वाली विधवा फूलमती काम तो मन से करती हैऔर भोजन बेमन विष के कौर के समान करती है। जब वह अपनी लड़की कुमुद की शादी में कुछ रुपये खर्च करने का प्रश्न करती है तो उसे अपने ही बेटों से कड़वे वचन सुनने को मिलते है। फूलमती जिद पर अड़ जाती है कुमुद का विवाह मुरारी लाल के लड़के से ही होगा तो उसका पुत्र अनेको अपमान जनक बातों से उनको अपमानित करता है -

'कामतानाथ बोला अम्माँ, तुम बरबस बात बढ़ाती है। जिन रूपयों को तुम अपना समझती हो, वह तुम्हारे नहीं है हमारे है। तुम हमारी अनुमति के बिना उनमें से कुछनहीं खर्च कर सकती।'

'फूल मती को जैसे सर्प ने डस लिया-क्या कहा!फिर तो कहना! मैं अपने ही संचे रुपए अपनी इच्छा से नहीं खर्च कर सकती ?'

'वह रुपए तुम्हारे नहीं रहे, हमारे हो गए।'

'तुम्हारे होगे, लेकिन मेरे मरने के पीछे।'

'नहीं, दादा के मरते ही हमारे हो गए।'

उमानाथ ने बेहयाई से कहा- 'अम्माँ कानून-कायदा, तो जानती नहीं, नाहक उलझती हो।'

फूलमती, क्रोध में निहाल होकर वाली -भाड़ में जाए तुम्हारा कानून मैं ऐसेकानून को नहीं मानती। तुम्हारे दादा ऐसे कोई बड़े धन्नासेठ न थे। मैंने ही पेट और तन काटकर यह गृहस्थी जोड़ी है नहीं आज बैठने की छाँह न मिलती।मेरे जीते-जी तुम मेरे रुपए नहीं छू सकते। मैंने तीन भाइयों के विवाह में दस-दस हजार खर्च किए है। वहीं मैं कुमुद के विवाह में भी खर्च करूँगी।

कामतानाथभी गर्म पड़ा - आपको कुछ भी खर्च करने का अधिकार नहीं है।

उमानाथ ने बड़े भाई को डाँटा- आप खामख्वाह अम्माँ के मुहँ लगते हैभाई साहब। यह कायदा कानून तो जानती नहीं, बिना मतलब बहस करती है।

फूलमती ने संयमित स्वर में कहा - अच्छा कानून क्या है ? जरा मैं भी सूनूँ ?

उमा ने निरीह भाव से कहा- कानून यही हैकि बाप के मरने के बाद जायदाद बेटों को ही हो जाती है। माँ का हक केवल रोटी-कपड़े का है।

फूलमती ने तड़पकर पूँछा-किसने यह कानून बनाया है ?

उमानाथ शांत स्थिर स्वर में बोला-हमारे ऋषियों ने, महाराज मनु ने और किसने ?

फूलमती एक क्षण अवाक् रहकर आहत कंठ से बोली- तो इस घर में मैं तुम्हारे टुकड़ों पर पड़ी हुई हूँ।

उमानाथ ने न्यायाधीशकी निमर्मता से कहा -तुम जैसा समझो।[7]

मुंशी प्रेमचंद की 'सुभागी' ग्रामीण जीवन की एकलइकी की कहानी है। तुलसी औरलक्ष्मी की बेटी सुभागी पर केन्द्रित है। सुभागी 11 वर्ष की आयु में विधवा हो जाती है उसे अपने परिवार और समुदाय से अलग कर दिया जाता है लेकिन वह अपनी बुद्धिमानी और परिश्रम से समाज में अपना स्थान बना लेती है। [8]

'धिक्कार'कहानी में भी प्रेमचंद पात्रों के द्वारा विधवा विवाह का समर्थन करते हैं। धिक्कार कहानी का पात्र इन्द्रनाथ मानी नाम की विधवा स्त्री से विवाह करता है –

गोकुल डरते–डरते कहता है– लेकिन तुम्हें मालूम है, वह विधवा है।

इन्द्रनाथ ने मुस्कुराकर कहा– जानता हूँ, सुन चुका हूँ और इसलिए तुम्हारे बाबूजी से कुछ कहने का मुझे अब तक साहस नहीं हुआ। लेकिन न जानता तो भी इसका मेरे निश्चय पर कोई असर न पड़ता। यानी विधवा ही नहीं अछूत हो, उससे भी गयी बीती अगर कुछ हो सकती है वह भी हो, फिर भी मेरे लिए वह रमणी–रत्न है। किसी रमणी का विधवा होना मेरी आँखों में दोष नहीं गुण है।[9]

प्रेमचंद ने विधवाओं की समस्याओंको कहानियों के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया।

प्रेमचंद के व्यक्तित्व जीवन में भी नारी पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होने से उन्हें सोचने पर विवश किया। जन्म लेते ही उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। दूसरी माँ के रुप में विमाता से तिरस्कृत होते रहे और उनकी पहली पत्नी से विचार नहीं मिलते थे। शिवरानी देवी के रूप में उन्हें दूसरी आदर्श पत्नी मिली। प्रेमचंद जी ने नारी के प्रत्येक रूप चाहे बहु, माँ, पत्नी, बहन, प्रेमिका, शिक्षिका यहाँ तक वेश्या जितने भी रूप नारियों के हो सकते है प्रेमचंद के साहित्य में विशेष भूमिका निभाते हैं।

डॉ. इन्द्रनाथ मदान प्रेमचंद के साहित्यिक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लिखते हैं कि 'प्रेमचंद के पाठकों के मनोरंजन के लिए या स्त्रियों और पुरुषों की वासना तथा प्रेम की समस्या वाली कहानियों के प्रति उत्पन्न जिज्ञासा कोशांत करने के लिए उपन्यास और कहानियों की रचना नहीं की। कला की उनकी भावना बड़ी ऊँची थी। जीवन की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं के संबंध में उनके जोविचार थे उनको व्यक्त करने के साधन ही वे कला समझते थे।'[10]

प्रेमचंद के समय जो समाज, शोषितों के गुलाम था किन्तु आज अपनों के द्वारा शोषित हो रहे है। एक साहित्यकार की नजर सिर्फ वर्तमान पर ही नहीं बल्कि वह भविष्य पर भी अपना दृष्टिकोण बनाये रखते हैं।

निष्कर्ष – प्रेमचंद ने अपने कहानियों में नारी की सम्पूर्ण स्थिति का चित्रण कर उन्हें ऊपर उठने के लिए एक नई सोच व नई दिशा प्रदान की। प्रेमचंद की कहानियों में शुरुआती दौर पर नारी की समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है लेकिन धीरे–धीरे नारियों का विकासात्मक रूप भी दिखाई देता है जो जरूरत पढ़ने पर समाज की रूढ़ियो आडंबरों आदिका खुलकर विरोध करती है। प्रेमचंद का उद्देश्य नारियों की समस्याओं से परिचित कर उन्हें जागरूक एवं सचेत करना ताकि वह अपने अधिकारों के लिए स्वयं जागृत हो सके। प्रेमचंद ने नारियों की शिक्षा का भी समर्थन किया। वे मानते थे कि एक शक्ति सम्पन्न नारी ही समाज का सर्वांगीण विकास कर सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. प्रेमचंद, नैरास्य, मानसरोवर–3, लोकभारती प्रकाशन, 2022
2. प्रेमचंद, नरक का मार्ग, मानसरोवर–3, लोकभारती प्रकाशन, 2022
3. प्रेमचंद, नया विवाह, मानसरोवर–2, लोकभारती प्रकाशन, 2022
4. प्रेमचंद, सौत, इंटरनेट डॉट कॉम
5. प्रेमचंद, स्वामिनी, मानसरोवर–1 लोकभारती प्रकाशन, 2023
6. प्रेमचंद सोहाग कासव, मानसरोवर–5, लोकभारती प्रकाशन, 2022
7. प्रेमचंद, बेटो वाली विधवा, मानसरोवर–1, लोकभारती प्रकाशन, 2023
8. प्रेमचंद, सुभागी, मानसरोवर–1, लोकभारती प्रकाशन, 2023
9. प्रेमचंद, धिक्कार, मानसरोवर–1, लोकभारती प्रकाशन, 2023
10. प्रेमचंद : एक विवेचना डॉ इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृ.स. –152

****